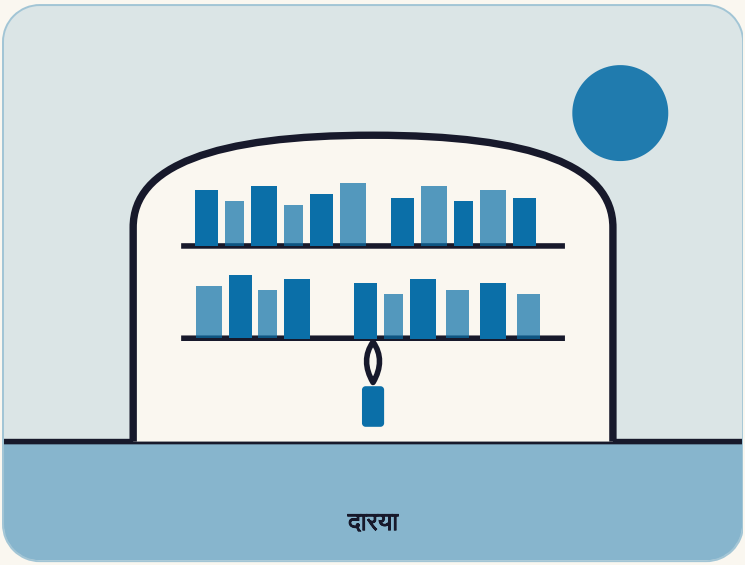

सीरिया

बमों के नीचे का गुप्त पुस्तकालय

घिरे हुए एक सीरियाई क़स्बे में युवा दोस्तों ने मलबे से किताबें बचाईं और एक तहख़ाने में पुस्तकालय छिपा लिया।

कहाँ दारया

कौन दारया, सीरिया के युवा दोस्तों का एक समूह और उनसे जुड़ने वाले स्वयंसेवक

कब 2012 से 2016

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

दारया सीरिया की राजधानी दमिश्क के पास एक क़स्बा है। 2012 में, सीरिया के युद्ध के दौरान, सरकारी बलों ने उसे घेर लिया। इसे घेराबंदी कहते हैं। क़स्बा चार साल तक कटा रहा। बम अक्सर गिरते थे।

युवाओं के एक समूह के मन में एक विचार आया। वे टूटी और ख़ाली इमारतों में किताबें खोजेंगे। उन्होंने हज़ारों किताबें बचा लीं।

तहख़ाने में पुस्तकालय

उन्होंने एक तहख़ाने को पुस्तकालय बना दिया। वह एक गली में था, ऐसी इमारत के नीचे जिसकी ऊपरी मंज़िलें ढह चुकी थीं। कोई बोर्ड नहीं था। लोग उसे मुँह-ज़बानी पता करके पहुँचते थे।

एक बयान के मुताबिक़ उसमें लगभग 15,000 किताबें थीं। पुस्तकालय के नियम एक काग़ज़ पर छापकर दरवाज़े के पास के खंभे पर चिपकाए गए थे। पुस्तकालयाध्यक्ष की इजाज़त के बिना किताब नहीं ले जा सकते। देर से लौटाना मना। दूसरों के पढ़ते समय चुप रहें।

युद्ध से पहले इन दोस्तों में से कई को पढ़ना पसंद नहीं था। उनके लिए किताबों का मतलब सेंसरशिप था। अब किताबें बाहरी दुनिया की खिड़की थीं।

> किताबें खोया हुआ समय पूरा करने और अज्ञान मिटाने का हमारा तरीक़ा हैं।
>
> अबू अल-इज़, सह-संस्थापक, ABC News के हवाले से, 2021

4	14	15,000
घेराबंदी के साल	ख़ुद को मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष कहने वाले की उम्र	एक बयान के मुताबिक़ बचाई गई किताबें

बमों के नीचे ज़िंदगी

मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष अमजद नाम का एक लड़का था। वह 14 साल का था। बाक़ी मददगार इंजीनियरिंग और रसायन विज्ञान के विद्यार्थी थे। पुस्तकालय ने पाठ्यपुस्तकें भी जुटाईं, ताकि विद्यार्थी पढ़ाई जारी रख सकें।

अलमारियों पर राजनीति, दर्शन और दूसरे देशों की कहानियाँ थीं। सबसे ज़्यादा पढ़ी गई किताब द अल्केमिस्ट का अरबी अनुवाद थी।

वहाँ लोग भाषण-चर्चाएँ करते थे। एक दोस्त की सगाई वहीं हुई। कुछ ने युद्ध में खोए एक दोस्त का शोक वहीं मनाया।

एक बार धमाकों ने प्रवेश-द्वार तोड़ दिया और उसे मलबे में दबा दिया। कोई घायल नहीं हुआ। युवाओं ने टूटा काँच और पलस्तर साफ़ किया। कुछ ही दिनों में उन्होंने उसे फिर खोल दिया।

अंत

2016 के आख़िर में घेराबंदी ख़त्म हुई। दारया के लोगों को वहाँ से जाना पड़ा। वे सिर्फ़ एक-दो थैले ले जा सके।

इस कहानी का पीछा करने वाली एक पत्रकार के मुताबिक़ सैनिकों को बाद में पुस्तकालय मिला और वे उसकी किताबें दमिश्क ले गए। उन्हें कबाड़ी बाज़ारों में बेचा गया। पुस्तकालय के दोस्तों ने कुछ वापस ख़रीद लीं।

आज पुस्तकालय से जुड़े लोग उत्तरी सीरिया, तुर्की और फ़्रांस में रहते हैं। वे घर लौटने का सपना देखते हैं।

कब क्या हुआ

- **2012** सरकारी बल दारया को घेर लेते हैं।
- **2015** एक पत्रकार को ऑनलाइन पुस्तकालय का पता चलता है।
- **2016** घेराबंदी ख़त्म होती है और लोगों को जाना पड़ता है।
- **2019** एक फ़िल्म और एक किताब यह कहानी बताती हैं।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

युद्ध की ज़्यादातर कहानियाँ लड़ाई की होती हैं। यह कहानी पढ़ने की है।

दुनिया से कटे एक क़स्बे में किताबें बाहर निकलने का रास्ता थीं, और इंसान बने रहने का भी।

हमारी राय

जब लगभग सब कुछ छिन गया था, तब पढ़ने की एक शांत दिनचर्या ने उन्हें ख़ुद बने रहने में मदद की।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1. ### ज़िंदगी बिखरने पर भी दिनचर्या बनाए रखिए

   बमों के बीच भी पुस्तकालय के खुलने के समय और नियम थे।

   यह आज़माएँ: एक छोटी रोज़ की आदत चुनिए और इस हफ़्ते उसे निभाइए, ख़राब दिन में भी।

2 जो दूसरे छोड़ जाते हैं, उसे बचाइए

दोस्तों ने टूटी इमारतों से किताबें बचाईं।

यह आज़माएँ: कोई ऐसी एक चीज़ खोजिए जिसे लोग फेंक रहे हैं, और उसे दूसरी ज़िंदगी दीजिए।

3 पढ़ने को अपनी सोच बदलने दीजिए

युद्ध से पहले उनमें से कई को पढ़ना पसंद नहीं था। फिर किताबें एक खिड़की बन गईं।

यह आज़माएँ: ऐसी किताब के दस पन्ने पढ़िए जो आप आम तौर पर न चुनते।

4 ऐसी जगह बनाइए जहाँ लोग जुट सकें

वहाँ लोगों ने भाषण-चर्चाएँ कीं, अख़बार की योजना बनाई और सगाई मनाई।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते दो लोगों को कोई किताब या विचार बाँटने बुलाइए।

साथ ले जाने वाली एक बात

जहाँ बहुत कुछ खो गया, वहाँ किताबों की एक अलमारी ने फिर भी लोगों को जोड़े रखा।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

ABC News (Australia)
Above them, war ravaged their city. But below ground, a group of unlikely librarians found hope (2021)

Al Jazeera
Daraya: A Library Under Bombs in Syria (Witness, 2019)

Kirkus Reviews
Syria's Secret Library, by Mike Thomson (2019)

Publishers Weekly
Syria's Secret Library, review (2019)

तथ्य-जाँच नोट: दो पत्रकार यह कहानी अलग-अलग बताते हैं। डेल्फ़िन मिनुई (ABC News की बातचीत; Al Jazeera का फ़िल्म-पन्ना) ने उन युवाओं से ऑनलाइन बात की और कभी दारया नहीं गईं। BBC के माइक थॉमसन ने एक अलग किताब लिखी, जिसे यहाँ Kirkus और Publishers Weekly की समीक्षाओं से जाना गया; मैंने वह किताब नहीं पढ़ी। ब्योरों में फ़र्क़ है। ABC पुस्तकालय को 2012 का और Kirkus 2013 का बताता है, इसलिए कहानी में शुरुआत का कोई साल नहीं है। ABC और Al Jazeera "हज़ारों" और "लगभग 15,000" किताबें कहते हैं; कहानी 15,000 को एक बयान के रूप में देती है। मिनुई कहती हैं कि जाते समय कुछ लोगों ने अपने एक थैले में एक किताब रख ली; Kirkus कहता है कि किताबों की इजाज़त नहीं थी, इसलिए कहानी थैले वाली बात छोड़ देती है। सैनिकों का पुस्तकालय लूटना और दमिश्क में किताबों का बिकना सिर्फ़ मिनुई का बयान है। जाने के लिए 48 घंटे की मियाद Al Jazeera के फ़िल्म-विवरण में है और इस्तेमाल नहीं की गई। अमजद की उम्र (14) और उसका पद Kirkus से हैं; Publishers Weekly भी उसका नाम लेता है। स्रोत युद्ध के दोनों पक्षों के लिए अलग-अलग शब्द इस्तेमाल करते हैं, इसलिए कहानी सिर्फ़ "सरकारी बल" कहती है और युवाओं को कोई नाम नहीं देती। कई स्रोत पुस्तकालय को गुप्त और छिपा हुआ बताते हैं; मैं इसे स्वतंत्र रूप से जाँच नहीं सका। "हमारी राय" वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।